ISSN : 2229-3841

NATIONAL
Journal of Education

A Half-Yearly
Peer Reviwed Refereed
Educational
Research Journal

Chief Editor
Dr. G. P. Mishra

Dec19 & Jan-2020 Issue - 12 Vol. 14-15

ISSN – 2229-3841

National Journal of Education

A Half-Yearly Peer Reviewed Refereed Educational Research Journal

December 2019 & January 2020 • Issue : 12, Vol.: 14-15

Patron

Prof. Akhilesh Chaube
Former Dean & Head
Department of Education,
University of Lucknow, Lucknow (U.P.)

Chief Editor

Dr. Girja Prasad Mishra
Head, Department of Education
Post Graduate College, Patti, Pratapgarh (U.P.)

Co-Editors

Dr. Dharmendra K. Sarraf
Assistant Professer,
Department of Education
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya,
Sagar (M.P.)

Dr. Ruchi Dubey
Assistant Professor,
Department of Education
University ofAllahabad,
Prayagraj (U.P.)

Advisory Board

Prof. Kalplata Pandey
Vice Chancellor
Jananayak Chandrashekhar University,
Ballia (U.P.)

Prof. Pradeep K. Pandey
Director, School of Education
U. P. R. T. O. U., Prayagraj (U.P.)

Prof. Anup Kumar
Head, Department of Adult and
Continuing Education
Dr. Rammanohar Lohia Avadh
University, Ayodhya
(U.P.)

Prof. Anand Shankar Singh
Principal
Ishwar Saran Degree College
Prayagraj
(U.P.)

Dr. Vidyapati
Dean & Head, Faculty of Education
Ewing Christian College, Prayagraj
(U.P.)

Prof. Akhilesh K. Pandey
Principal
Post Graduate College, Patti, Pratapgarh
(U.P.)

Contents

1. Impact of Usage of Social Networking Sites on Education
Diksha Diwakar 7
2. A Comparative Study of Depression among Arts and Science undergraduate student with special reference to Azamgarh District of Uttar Pradesh
Girja Prasad Mishra & Dharmendra Kumar 14
3. A Comparative Study of Different Dimensions of Spiritual Values among urban & rural higher secondary school students
Ravi Shankar Tripathi 20
4. अध्यापक शिक्षा : वर्तमान संदर्भ की चुनौतियां *राजीव कुमार तिवारी* 28
5. विवाह के पश्चात महिलाओं की शिक्षा निरंतरता को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों का अध्ययन : प्रयागराज जनपद के विशेष सन्दर्भ मे *डॉ. मंजू कुमारी* 36
6. शैक्षिक मूल्य और उसके आधार *सुरेन्द्र प्रताप* 47
7. यू.पी. बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन
डॉ. धर्मेन्द्र शुक्ल एवं आरती सिंह 52
8. ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020
कु० रेनु 61
9. शैक्षिक तकनीकी की आवश्यकता एवं उपयोग *प्रार्थना यादव* 67
10. बाल श्रमिकों की वर्तमान सामाजिक स्थिति *सरिता प्रजापति* 73
11. निःशुल्क अनिवार्य बाल शिक्षा एवं बाल अधिकार *रितु कुमारी* 77
12. आचार्य रजनीश 'ओशो' की समन्वयवादी शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता
डॉ० अंकुर चौहान 83
13. जिला रीवा के माध्यमिक स्तर वाले विद्यालय के प्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशल का विकास *डॉ. पी.एन. मिश्र, अखिलेश सिंह* 91
14. बी.एड. स्तर के विद्यार्थियों की मूल्यों पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन *शमशाद अली* 97
15. वर्तमान परीक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता *डॉ० रंजन कुमार शर्मा* 104
16. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध *डॉ. पीयूष राज प्रभात* 111
17. उच्च शिक्षा में निजी शिक्षण संस्थाओं की भूमिका
डॉ. माता प्रताप सिंह 117
18. पाठ्य पुस्तकों की परिधि से परे पाठ्यचर्या मे नवाचार एवं भाषा शिक्षण
अनुराग 123
19. नयी शिक्षा नीति 2020 के आलोक में प्रौढ़ शिक्षा (जीवन पर्यन्त सीखना) की आवश्यकता एवं महत्व का मूल्यांकन *कुमारी शशि सिंह* 129
20. शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की प्रशासनिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन *डॉ. अनुपमा सिंह* 139
21. वर्तमान में मूल्य शिक्षा में विश्वभारती (शान्ति निकेतन) का महत्व
डॉ. गिरिजा प्रसाद मिश्र एवं शमीम अहमद 148
22. वर्तमान समय मे विद्यार्थियों के तनाव, समायोजन एवं उनकी अध्ययन आदतों पर योग का प्रभाव *सत्य कुमार मिश्र एवं डॉ. अजय कुमार दुबे* 152

ISSN – 2229-3841

National Journal of Education

A Half-Yearly Peer Reviewed Refereed Educational Research Journal

December 2019 & Jan.2020 • Issue : 12, Vol.: 14-15

नयी शिक्षा नीति 2020 के आलोक में प्रौढ़ शिक्षा (जीवन पर्यन्त सीखना) की आवश्यकता एवं महत्व का मूल्यांकन

कुमारी शशि सिंह

सहायक प्राध्यापिका

मुण्डेश्वरी कॉलेज फॉर टीचर एजुकेशन, पटना

ABSTRACT

व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा परम आवश्यक है।यदि अतिशयोक्ति न मानी जाय तो कहा जा सकता है कि अशिक्षित व्यक्ति तो पशु तुल्य है। प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य उन प्रौढ व्यक्तियों को शैक्षिक विकल्प देना है, जिन्होंने यह अवसर गंवा दिया है और औपचारिक शिक्षा आयु को पार कर चुके हैं, लेकिन अब वे साक्षरता, आधारभूत शिक्षा, कौशल विकास (व्यावसायिक शिक्षा) और इसी तरह की अन्य शिक्षा सहित किसी तरह के ज्ञान की आवश्यकता का अनुभव करते हैं। विश्व के विभिन्न देशों में प्रौढ़ शिक्षा की परंपरा उतनी ही प्राचीन है, जितनी कि उनकी सभ्यता और संस्कृति। लेकिन एक अकादमिक विषय के रूप में 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्रौढ़ शिक्षा का सूत्रपात हुआ जिसे 20वीं सदी में विश्वव्यापी मान्यता प्राप्त हुई। काफी लम्बे समय तक प्रौढ़ शिक्षा को पूरक या उपचारात्मक शिक्षा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है लेकिन अब सतत शिक्षा और जीवनव्यापी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रौढ़ शिक्षा स्वयं में एक स्वतंत्र विद्या बन गई है। वर्तमान में प्रौढ़ शिक्षा का स्वरूप औपचारिक और औपचारिकेत्तर दोनों हो सकता है। प्रौढ़ शिक्षा को मात्र साक्षरता आंदोलन नहीं कहा जा सकता है बल्कि इसके अंतर्गत व्यावसायिक व तकनीकी प्रशिक्षण, वैज्ञानिक ज्ञान के साथ-साथ समाज में स्वतंत्रता, समानता, न्याय जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों के विस्तार को गति प्रदान की जाती है।

INTRODUCTION (परिचय)

वयस्क शिक्षा वयस्कों को पढ़ाने और शिक्षित करने का अभ्यास है। "विस्तार" अध्ययन केंद्र या "सतत शिक्षा के विद्यालय" के माध्यम से वयस्क शिक्षा कार्यस्थल में होती है। अन्य शिक्षण संस्थानों में सामुदायिक विद्यालय, लोक उच्च विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय, पुस्तकालय और आजीवन सीखने के केंद्र शामिल हैं। अभ्यास को अक्सर "प्रशिक्षण और विकास" के रूप में भी जाना जाता है और अक्सर कार्यबल या व्यावसायिक विकास से जुड़ा होता है। इसे ऐंड्रागोजी (Andragogy) भी कहा गया है। वयस्क शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा से भिन्न होती है। ज्यादातर कौशल सुधार के लिए कार्यस्थल-आधारित होती है; और गैर-औपचारिक वयस्क शिक्षा से भी, जिसमें कौशल विकास या व्यक्तिगत विकास के लिए सीखना शामिल है। "प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य उन प्रौढ व्यक्तियों को शैक्षिक विकल्प देना है, जिन्होंने यह अवसर गंवा दिया है और औपचारिक शिक्षा आयु को पार कर चुके हैं, लेकिन अब वे साक्षरता, आधारभूत शिक्षा, कौशल विकास (व्यावसायिक शिक्षा) और इसी तरह की अन्य शिक्षा सहित किसी तरह के ज्ञान की आवश्यकता का अनुभव करते हैं। प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पहली पंचवर्षीय योजना से अनेक कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, जिनमें सबसे प्रमुख राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (एन एल एम) है, जिसे समयबद्ध तरीके से 15-35 वर्ष की आयु समूह में अशिक्षितों को कार्यात्मक साक्षरता प्रदान करने के लिए 1988 में शुरू किया गया था। इस केन्द्र का प्रौढ़ शिक्षा विभाग के रूप में पुन: नामकरण किया गया और 1961 में इसे रा.शै.अनु.प्र.प. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद) के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का भाग बनाया गया। सरकार के प्रौढ़ शिक्षा पर जोर के परिणामस्वरूप देश में प्रौढ़ शिक्षा कार्यकलापों/कार्यक्रमों में पर्याप्त वृद्धि को देखते हुए इस विभाग को (रा.शै.अनु.एवं प्र.प.)से अलग किया गया और 1971 में इसे स्वतंत्र पहचान दी गई। कुछ समय के लिए इसे अनौपचारिक (वयस्क) शिक्षा निदेशालय के रूप में जाना जाता रहा था और अंतत: प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के रूप में। वर्षों से इस निदेशालय ने प्रौढ़ शिक्षा/साक्षरता क्षेत्र में कार्यकलापों का आकार और कवरेज दोनों बढ़ाया है। भारत में सबसे सराहनीय कदम की शुरुआत नेशनल फंडामेंटल एजुकेशन सेंटर (NFEC) ने प्रौढ़ शिक्षा की कल्पना के रूप में की,जिसे भारत सरकार ने 1956 में शुरू किया। बाद में इसका नाम बदलकर प्रौढ़ शिक्षा विभाग कर दिया गया जो की राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का हिस्सा बन गया। प्रौढ़ शिक्षा योजना भारत सरकार द्वारा भी काफी प्रोत्साहित की गयी और कई लोग इस योजना का फायदा उठाने

आगे आये। प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य उन लोगों तक शिक्षा को पहुँचाना है जो अपने बचपन में पढ़ाई पूरी नहीं कर पाये। सरकार ने ऐसे लोगों के लिए नए विद्यालयों की स्थापना की है ताकि उनको बुनियादी शिक्षा या पेशेवर शिक्षा दे पायें। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा लोगों को न सिर्फ शिक्षा दी जा रही है बल्कि अपने लिए रोजगार ढूंढने में भी सहायता की जा रही है। दिन में अपने रोज़गार में व्यस्त रहने वाले व्यक्तियों के लिए रात्रि कक्षा का प्रबंध किया गया है और बहुत से लोगों को इसका फायदा भी मिला है। शिक्षा से कई लोग अच्छे स्तर पर नौकरी हासिल करने में सफल रहे है और आज समाज में सम्मानजनक जीवन जी रहे है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के प्रचालन हेतु कार्रवाई कार्यक्रम में अन्य बातों के साथ-साथ सरकार और गैर सरकारी संगठनों (एन जी ओ) के बीच उपयुक्त साझेदारी के विकास की परिकल्पना की गई थी और यह प्रावधान किया गया था कि उन्हें अपेक्षित सहायता प्रदान करके सरकार प्रौढ़ निरक्षरता के उन्मूलन में उनकी अधिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक कदम उठाएगी। स्वयंसेवी क्षेत्र के जरिए खासकर 15-35 आयु समूह में प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा भारत सरकार ने दो अलग स्कीमों:- (i) प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में स्वैच्छिक एजेंसियों को सहायता, और (ii) जन शिक्षण संस्थान के जरिए स्वैच्छिक एजेंसियों को सहायता प्रदान करता आ रहा है। इसमें प्रौढ़ शिक्षा को तकनीकी और अकादमिक सहायता के लिए राज्य संसाधन केन्द्रों की स्थापना शामिल है। दूसरी ओर जन शिक्षण संस्थान उन्हें, जिनके पास शिक्षा का स्तर नहीं है या प्रारंभिक स्तर है, को व्यावसायिक शिक्षा कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करता है। सरकार ने अब दोनों स्कीमों को मिलाने और संशोधित स्कीम को "प्रौढ़ शिक्षा और कौशल विकास के लिए स्वैच्छिक एजेंसियों को सहायता की स्कीम" के रूप में पुन: नामित करने और स्वैच्छिक एजेंसियों को परियोजना आधार पर सहायता जारी रखने का निर्णय लिया है। प्रौढ़ शिक्षा की प्रस्तावना बहुत से व्यक्तियों के लिए वरदान साबित हुई है। बहुत बड़ी संख्या में लोग, जो खासकर बचपन में किसी कारणवश शिक्षा से वंचित रह गये थे, उन्हें इस योजना के तहत काफ़ी लाभ प्राप्त हुआ है। इनमे मुख्यत: वे है जो गरीब तबके से है और पैसे के अभाव, ख़राब पारिवारिक स्थिति, स्थान विद्यालयों के न होने आदि के कारण पढ़ नहीं पाए। बचपन में तो उन पर निरक्षरता का कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा पर जैसे जैसे समय बीता तो उन्हें अपनी जीविका अर्जित करने के लिए खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ा।

भारतवर्ष में हुए बहुत से व्यापक शोध और विश्लेषण द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के प्रमुख कारकों का उल्लेख किया गया है जिसमें :

राजनीतिक इच्छाशक्ति

संगठनात्मक संरचना

पर्याप्त वित्तीय सहायता

सामुदायिक भागीदारी तथास्वैच्छिक कार्यकर्ताओं का उन्नतर गुणवत्तापूर्ण क्षमता संवर्धन इत्यादि प्रमुख है। कोई भी व्यक्ति शिक्षा द्वारा ही किसी भी प्रकार के कार्यों को करने तथा अपने समाज एवं देश को अग्रसारित करने में अपना योगदान दे सकता है। बुनियादी साक्षरता के आधार पर व्यक्ति अपने जीविकोपार्जन से लेकर अपने मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य को जान पाएगा एवं उसका उचित लाभ उठा पाएगा। कोई भी समुदाय अगर गैर साक्षर रहता है तो वह अपने जीवन के अनेक बहुमूल्य पहलुओं को खो देता है फिर वह पहलू बच्चों की शिक्षा हो, नवाचार हो या नवीन जानकारी प्राप्त करना हो या अपने देश के नागरिक के रूप में अपने मूल अधिकारों एवं कर्तव्यों का वहन करने का कार्य हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रौढ़ शिक्षा को ध्यान में रखते हुए कहा गया है कि प्रौढ़ शिक्षा के लिए एन •सी •ई •आर •टी द्वारा पाठ्यचर्यात्मक ढाँचे में 5 तरह के कार्यक्रमों को शामिल करने की बात कही गई है जो निम्नांकित है :

1. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान
2. महत्वपूर्ण जीवन कौशल (जैसे वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कौशल, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, शिशु पालन एवं शिक्षा और परिवार कल्याण)
3. व्यावसायिक कौशल विकास
4. सतत शिक्षा (जैसे कला, विज्ञान, तकनीकी संस्कृति, खेल, मनोरंजन आदि)
5. बुनियादी शिक्षा (प्रारम्भिक, माध्यमिक और उन्नतर माध्यमिक स्तर)।

प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं जिसमें विद्यालय में पढ़ाई के घंटों के बाद तथा सप्ताह के अंत पर स्कूल परिसर का उपयोग, प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय जो संभवत: आईसीटी से सुसज्जित हो आदि का ध्यान रखना होगा। इस नीति के अनुसार उपयुक्त बुनियादी ढांचा सुनिश्चित किया जाएगा ताकि सभी प्रौढ़ों जो कि पढ़ने की इच्छा रखते हैं को आजीवन अधिगम प्राप्त हो सके। आज के प्रगतिशील युग में कोई भी व्यक्ति अशिक्षित रहकर समय के साथ चल पाने में एक कदम भी सफल नहीं हो सकता।

व्यक्ति गांव या शहर जहां कहीं भी रहता है, वह पूरे देश, समाज और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य सभी के साथ शिक्षा के बल पर ही जुड़ सकता है। देश-विदेश में जो तरह-तरह की प्रगतियां हो रही हैं, सभी की उन्नति और विकास की योजनाएं चल रही हैं, साधन और उपकरण सामने आ रहे हैं, अशिक्षित व्यक्ति या तो उनसे अपरिचित रहकर लाभ नहीं उठा पाता, या दूसरों के चंगुल में फंसकर ठगा जाता है। स्वयं को शिक्षित बनाकर ही उस ठगी से बचते हुए जीवन को सुचारू रूप से व्यतीत किया जा सकता है। इन्हीं संदर्भों में शिक्षा का वास्तविक महत्व अब देखा जा सकता और देखा भी जाने लगा है। शिक्षा के माध्यम से ही समय के साथ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पल का सदुपयोग हो सकता है। पढ़ते-लिखने से जो जानकारियां प्राप्त होती है, उनसे जीवन को उन्नत बनाया जा सकता है। जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर चला जा सकता है। प्रौढ़ शिक्षा इसलिए भी जरूरी है कि अभी तक के अनपढ़ और पिछड़े लोग उसकी आवश्यकता और महत्व को समझकर, कम से कम अपने बच्चों तथा अगली पीढ़ियों का मार्ग तो प्रशस्त कर सकें। कोई व्यक्ति किसान है, मजदूर है, बढ़ई, लोहार या और जो कुछ भी है, शिक्षा पाकर वह अपने धंधों को उन्नत बना सकता है। समय के साथ उसके जीवन के प्रत्येक पल का सदुपयोग कर सकता है। प्रौढ़ों को शिक्षा पाने के लिए न तो दूर जाने की जरूरत हो और न समय का ही कोई प्रश्न हो। उनके आस-पास ही ऐसे स्थान में इस शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए कि वे अपने सभी प्रकार के दैनिक कार्यों से फुर्सत पाकर थोड़ी लगन और परिश्रम से पढ़-लिख सकें। प्रौढ़ स्त्रियों के लिए भी दोपहर के फुर्सत के समय में शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि परिवार की स्त्रियाँ भी शिक्षित हो सकें। परिवार की नारियों का शिक्षित होना पुरुषों से भी अधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण माना जाता है। वह इसलिए क्योंकि घर-परिवार के बच्चों पर उन्हीं का प्रभाव अधिक पड़ता है। स्वयं शिक्षित होकर वे बच्चों को भी पढ़ते-लिखने के लिए सरलता से प्रोत्साहित कर सकती है। प्रौढ़ समुदाय का अपने घर-परिवार, मोहल्ला, गांव और प्रदेश के साथ-साथ पूरे देश के भविष्य के हित में यह कर्तव्य हो जाता है कि वे इस व्यवस्था का पूरा लाभ उठाएं, ताकि भारत सुशिक्षित होकर उन्नत होने का उचित गर्व कर सकें। भावी पीढ़ियां प्रौढ़ों का अनुकरण कर सब प्रकार की समृद्धियां प्राप्त कर सकें।

प्रौढ़ शिक्षा द्वारा विकास :

प्रौढ़ शिक्षा द्वारा विकास के कुछ प्रमुख बिंदुओं की चर्चा की जा रही है-

मानवीय मूल्यों का विकास करना -

मानवीय मूल्यों के कारण व्यक्ति में नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास होता है। प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से प्रौढ़ों में नैतिक आचरण की शिक्षा दी जाती है। शिक्षित मष्तिष्क वाला व्यक्ति ही नैतिक व्यवहार सर्व धर्म सम्भाव एवं आदर्श जीवन को महत्व दे सकता है। प्रौढ़ शिक्षा इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करती है।

निरक्षरता के कलंक से मुक्ति -

साक्षरता का गुणगान बहुत प्राचीनकाल से होता रहा है। "बिना पढ़े नर पशु कहावै; जग में सैकड़ों दुख उठावै।" वाली पंक्तियां प्राचीनकाल से ही चरितार्थ होती आ रही हैं। निरक्षरता के अभिशाप को लोग पहले भी समझते थे।

"माता शत्रु पिता वैरी येनबालो न पाठिता न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।"

कहकर संस्कृत के विद्वान निरक्षरता के कलंक से बचने के लिए लोगों को आरम्भ से ही सावधान एवं सतर्क करते आये हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने "हरिजन बंधू" में लिखा था- "जन- समूह की निरक्षरता हिन्दुस्तान का पाप है, शर्म है और वह दूर होनी ही चाहिए। पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था-"निरक्षरों से छलकते राष्ट्र में औद्योगिक क्रान्ति सम्भव नहीं"।

व्यवसायिक कुशलता के लिए शिक्षा –

प्रौढ़ शिक्षा केवल साक्षरता तक ही सीमित नहीं है अपितु ऐसी शिक्षा देती है जिससे व्यक्ति व्यावहारिक जीवन में सफल हो सके और इसके लिए व्यावसायिक कुशलता का ज्ञान आवश्यक है। नगरों में व्यापारिक तथा औद्योगिक शिक्षा का ज्ञान और गांवों में कृषि, लघु उद्योग एवं घरेलू कार्यों में दक्षता का प्रशिक्षण जरूरी है। विशेषत: प्रौढ़ जिस कार्य में लगे हुए हैं, उसमें कौशल, वैज्ञानिक, तकनीकी ज्ञान एवं हुनर की सीख देना आवश्यक है और यह कार्य प्रौढ़ शिक्षा बखूबी करती है।

नागरिकता के चेतना का विकास

प्रौढ़ शिक्षा के द्वारा अनपढ़ नागरिकों के अन्दर एक ऐसी चेतना जगाना, जो उन्हें एक आदर्श नागरिक की भांति अपने जीवन को समाज में व्यतीत करने के योग्य बना सके। नागरिकता के श्रेष्ठ गुणों के विकास में ही लोग मिल-जुल कर सामाजिक एवं सामुदायिक कार्यों में भाग ले सकते हैं और अपने अन्दर समाज

...ा की भावना ला सकते हैं, जिससे व्यक्ति एवं समाज दोनों का कल्याण होता

...स्कृतिक दृष्टिकोण को जागरूक करना -

प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से गीत, कविता, नाटक, कहानी आदि से व्यक्ति के ...न्दर सांस्कृतिक चेतना जगाई जाती है। जीवन के प्रति वह उससे कलात्मक ...ष्टिकोण अपना सकता है और अवकाश के समय का सदुपयोग कर सकता है। ...ससे मनोरंजन के साधनों में भी वह रूचि ले सकता है।

...माजिक चेतना में वृद्धि कराना -

प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से प्रौढ़ों के अन्दर ऐसी भावना का विकास कराया ...ाता है, जिससे वे पूरे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से अवगत हो सकें। ...क-दूसरे की सहायता करना, खासकर समाज में कमजोर, असहाय तथा पिछड़े ...गों को यथासम्भव सहयोग देना इसका लक्ष्य है।

...ानवीय मूल्यों के प्रति भूमिका -

मानवीय मूल्यों के कारण व्यक्ति में नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास ...होता है। प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से प्रौढ़ों में नैतिक आचरण की शिक्षा दी जाती है। ...शिक्षित मस्तिष्क वाला व्यक्ति ही नैतिक व्यवहार सर्व धर्म सम्भाव एवं आदर्श ...जीवन को महत्व दे सकता है। प्रौढ़ शिक्षा इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करती है।

...सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता –

साक्षरता के साथ ही यह भी आवश्यक है कि प्रौढ़ों में ऐसी भावना का विकास कराया जाये, जिससे वे समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूक हो सके। विशेषत बाल-विवाह, दहेज, नशीले पदार्थों का सेवन, छुआछूत, अन्धविश्वास आदि को समाप्त करने के प्रयास में जुट सकें, ऐसी चेतना प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से दी जाती है।

...राष्ट्रीय लक्ष्य एवं विकास कि जानकारी देना -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कुछ महत्वपूर्ण राष्ट्रीय लक्ष्य रखे गये, जिनकी जानकारी प्रत्येक मनुष्य को देना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, पुरातन संस्कृति की रक्षा, विकास से सम्बन्धित योजनाओं की जानकारी एवं नये तकनीकी ज्ञान के

प्रति प्रौढ़ो में जागरुकता लाना आवश्यक है। प्रौढ़ शिक्षा इस ओर अपनी अहम भूमिका निभा रही है।

आशा और आत्म विश्वास की भावनाओं को जाग्रत करना –

प्रायः मानव में जीवन के प्रति निराशा की भावना पायी जाती है, इससे उसका जीवन दिग्भ्रमित रहता है। अतः प्रौढ़ शिक्षा प्रत्येक साक्षर व्यक्ति में आशा और आत्मविश्वास की भावना जाग्रत करती है। जिससे वे अपने जीवन में रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर अपने जीवन को सही मार्ग की ओर ले जा सकें।

महिलाओं और कमजोर वर्ग का विकास करना –

समाज में महिलाओं के प्रति घोर उपेक्षा की भावना पाई जाती है, साथ ही कमजोर एवं सुविधा विहीन लोगों का समुचित विकास न होने के कारण राष्ट्र की प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। अतः प्रौढ़ शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य यह है कि महिलाओं को साक्षर बनाकर उन्हें समाज में उचित स्थान दिया जाए, उनके अनुरूप व्यावसायिक शिक्षा दी जाये, साथ ही कमजोर वर्गों के प्रति अन्याय व शोषण न हो सके, इसके लिए उन्हें भी जागरुक नागरिक बनने के लिए शिक्षा दी जाती है।

स्वास्थ्य सम्बंधी जागरूकता के लिए शिक्षा :

आजकल उपचारात्मक चिकित्सा के स्थान पर रोगों की रोकथाम तथा शारीरिक स्वास्थ में आत्म-निर्भरता पर बल दिया जाता है। इसके लिए जरुरी है कि लोगों को पोषण, स्वच्छता, संक्रामक रोग, कृमियों व परजीवियों आदि के बारे में बताया बताया जाए। प्रौढ़ शिक्षा देते समय हम निरक्षरों तथा नवसाक्षरों को साधारण रोगो के लक्षणों, कारणों, रोकथाम व प्राथमिक उपचार के बारे में बता सकते है। इसके साथ ही उन्हे अच्छे स्वास्थ हेतु शारीरिक व्यायाम, सन्तुलित भोजन व योग की उपयोगिता भी समझाई जा सकती है। प्रौढ़ शिक्षा को लोगों को साक्षर बनाने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए, इसमें उस शिक्षा को भी शामिल करना चाहिए, जो प्रत्येक नागरिक को प्रजातान्त्रिक सामाजिक व्यवस्था में भाग लेने के लिए तैयार करे।"

इस नीति के अनुरूप यह प्रयास है कि समुदाय के सदस्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम बढ़-चढ़ कर भाग लें तथा सामाजिक कार्यकर्ता समुदायों में जाकर गैर नामांकित या स्कूल छोड़ देने वाले छात्रों का पता लगाकर उनकी सहभागिता

सुनिश्चित करें। यह नीति अनुशंसा करती है कि सभी समुदाय के निशक्तजन, सामाजिक -आर्थिक रूप से पिछड़े एवं विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थी शामिल हो सके और उनको सभी प्रकार की शैक्षिक सुविधा उपलब्ध कराई जा सके तथा सभी इस नीति से लाभान्वित हो। शिक्षा के द्वारा ही समाज का विकास संभव होता है एवं समाज से ही राज्य एवं देश को शिक्षित बनाया जा सकता है कि इसके लिए आवश्यक है कि देश का सभी व्यक्ति साक्षर हो।

CONCLUSION (निष्कर्ष)

चूंकि समय के साथ चलना आवश्यक होता है। हमारे पूरे जीवन के दौरान हमारे दिमाग, शरीर और परिस्थितियां लगातार बदलती रहती हैं। एक क्षेत्र में अपना करियर शुरू करने वाले किसी व्यक्ति को बदलाव के लिए लंबे समय तक रहना पड़ सकता है। वयस्क शिक्षण पाठ्यक्रम सब संभव बनाते हैं। ऐसी शिक्षा की उपलब्धता से हमें अपने दिमाग का अनुसरण करने और अपनी क्षमता को प्राप्त करने में बहुत आसानी होती है। "प्रौढ़ शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य साक्षरता का प्रचार-प्रसार कर उन लोगों को भी समय की रफ्तार के साथ जोड़ने का प्रयत्न करना है, जो किसी कारणवश निरक्षर और अशिक्षित रहकर पिछड़ गए हैं"। प्रौढ़ शिक्षा एक ऐसा मंच है जो उन लोगों को पढ़ने का मौका देती है जो किसी कारण उचित समय पर पढ़ नहीं पाते। आजादी के बाद दशकों तक महिलाओं की शिक्षा पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था। लेकिन जैसे-जैसे समाज विकसित हुआ और लोगों की सोच विकसित हुई, यह महसूस किया जाने लगा कि स्त्रियों का पढ़ना भी उतना ही जरूरी है जितना कि पुरुषों का। बहुत से बेटे-बेटियों ने अपनी अनपढ़ मां-दादी को पढ़ाने का बीड़ा उठाया और शायद इसी तरह प्रौढ़ शिक्षा के आरंभ का रास्ता बना। वयस्क शिक्षा का मुख्य उद्देश्य और पेशेवर दुनिया में कुछ वयस्कों के लिए समान अवसर और सम्मानित क्षेत्र प्रदान करना है। इसलिए शिक्षा पा कर, उनके पास बेहतर कैरियर या अपने वर्तमान कैरियर में उन्नति का दूसरा मौका है। वे नए कौशल भी विकसित कर सकते हैं जो उन्हें अपने पेशेवर जीवन के साथ मदद करेंगे। अपने ज्ञान और कौशल का विस्तार करते हुए, वे अपने कैरियर की संभावनाओं का विस्तार भी कर सकते हैं।

REFERENCES (संदर्भ सूची)

- https://www.mhrd.gov.in/hi/support_voluntary_agencies-hindi
- https://www.mhrd.gov.in/hi/adult-education-hindi

- https://www.mhrd.gov.in/hi/dae-hindi
- https://www.mycoaching.in/2019/09/praud-shiksha.html?m=1
- https://www.hindikiduniya.com/essay/essay-on-importance-of-adult-education/
- https://www.bureaucracytimesgroup.page/2020/01/bhaarat-mein-praudh-shiksha-vi-5Lfslc.html?m=1राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

❑❑❑